पाठ - 12
फ़रिशतों पर ईमान

الدرس الثاني عشر - هندي
الإيمان بالملائكة والكتب والرسول

फ़रिशतों पर ईमान तफ़सीली भी होगा और इजमाली भी। इजमाली इमान यह है कि अल्लाह ने फ़रिशतों को पैदा किया है उनकी बेशुमार किस्में हैं। कुछ फ़रिशते अर्श उठाने पर लगे हुए हैं। कुछ जन्नत के तो कुछ जहन्नुम के दारोग़ा हैं और कुछ बन्दों के कर्मों का लेखा जोखा तैयार करने में लगे हैं तफ़सीली ईमान यह है कि अल्लाह और उसके रसूल ने जिन फ़रिशतों के नाम बताये हैं जैसे जिब्रील, मीकाईल, जहन्नुम के दारोग़ा मालिक, और सूर फूंकने वाले इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सबको मानें अल्लाह तआला ने फरिशतों को प्रकाश से पैदा किया है। आईशा रज़ि से साबित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः फ़रिशतों को नूर से पैदा किया गया है और जिनों को आग की लपट से और आदम को उस चीज़ से जिसे तुमको बयान किया गया है

3. आसमानी किताबों पर ईमान : यह ईमान लाना ज़रूरी है कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को हक़ से अवगत कराने और उसकी तरफ़ दावत देने के लिए अनेक नबियों और रसूलों पर आसमानी किताबें उतारीं और हम उन सारी किताबों पर ईमान लाते हैं। अल्लाह कि जिन किताबों का नाम बयान किया गया है, जैसे तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन पाक, जो कि आखिरी आसमानी किताब है और दूसरी आसमानी किताबों की तसदीक़ करने वाली हैं। उम्मत पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हदीसों के साथ उसी किताब की पैरवी करना है और उसके आदेशों को मानना है। इसी वजह से अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरआन मजीद देकर इंसान और जिन्नात दोनों की तरफ़ भेजा है ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच फैसला कर सकें। अल्लाह तआला फरमाता **है** यानी "और यह एक किताब है जिसको हमने बड़ी ख़ैर व बरकत वाली बनाकर भेजा, अतः तुम उसकी पैरवी करो और डरो कि तुम पर रहम हो। अल्लाह तआला कुरआन पाक में दूसरी जगह फरमाता हैः यानी "और हमने तुम पर यह किताब नाज़िल फरमायी है जिसमें हर चीज़ का संतोषजनक बयान है और हिदायत, और रहमत और खुशख़बरी है मुसलमानों के लिए। (सुरह नहल आएत 89)

4. रसूलों पर ईमान : रसूलों पर इजमाली और तफ़सीली दोनों तौर पर ईमान लाना ज़रूरी है। हम इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह ने अपने बन्दों की ओर अनेक रसूलों को खुशख़बरी सुनाने वाला, डराने वाला, और हक़ की ओर दावत देने वाला बनाकर भेजा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः यानी "हमने हर उम्मत में रसूल भेजे कि केवल अल्लाह की इबादत करो और उसके सिवा तमाम माबूदों से बचो। (सूरह अलनह्ल, आयत 36)

जिसने उन रसूलों की दावत को स्वीकार किया, उसने सफलता और सलामती पायी और जिसने उनका विरोध किया, उसकी क़िस्मत में नाकामी और नामुरादी है। हम इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि सारे नबियों और रसूलों की दावत एक ही है। और वह दावत है कि अल्लाह को एक जाना जाए और केवल उसी की इबादत की जाए। अलबत्ता रसूलों की शरीअतें और आदेश अलग अलग थे। हम इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि अल्लाह ने कुछ रसूलों को कुछ रसूलों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है। और रसूलों में सबसे अफ़ज़ल और श्रेष्ठ सबसे आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया हैः यानी "हमने कुछ नबियों को कुछ पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) प्रदान की है।

दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता हैः यानी "लोगो! तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं लेकिन आप अल्लाह के रसूल हैं और ख़ातिमुन्नबीयीन हैं। यानी नुबूवत उन्हीं पर ख़त्म हो जाती है। (सुरह अहजाब 40)

अल्लाह ने जिन रसूलों के नाम का उल्लेख किया है या जिन रसूलों के नाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित हैं हम उन तमाम रसूलों पर तफ़सीली और विशेष रुप से ईमान लाते हैं, जैसे नूह, हूद, सालेह, इबराहीम, अलैहिमुस्सलाम अजमईन।